पाठ 6
हीरा-कुणी

• रवीन्द्रनाथ ठाकुर

आइए, सीखें : पालित पशु-पक्षियों के प्रति स्नेह भाव। ♦ संज्ञा के भेद-व्यक्तिवाचक , जाति वाचक तथा भाव वाचक संज्ञा का परिचय।

ग्वालिन का नाम था हीरा, और उसकी गाय का नाम था कुणी। हीरा का एक महीने का बच्चा था। गाय की भी एक महीने की बछिया थी। हीरा रायगढ़ के पर्वत पर चढ़कर महाराष्ट्र के राजा को दूध देने जाया करती थी। राजा, कुणी गाय का दूध पीकर आनन्द मनाता था। बछिया रोती रहती थी। हीरा के मन में बछिया के लिए किसी भी दिन दया नहीं जागती थी। दूध दुहने के समय कुणी गाय रह-रहकर बछिया को पुकारती थी। बछिया दौड़कर दूध पीने के लिए आती पर हीरा उसे लौटा देती। उसे खूँटे से बाँधे रखती थी। इस प्रकार बछिया अपनी माँ को नहीं पा सकती थी और दूध के लिए तरसती, बिलखती रहती थी।

हीरा का ध्यान उधर कभी जाता ही नहीं था। वह तो सुबह-शाम दूध दुहकर, उसे बेचने के लिए राजा के किले में चली जाती थी। रात होने से पहले ही हीरा किले से लौट आती थी। पहले, अपने बच्चे को दूध पिलाती, थपकियाँ देकर सुला देती फिर बछिया को पकड़कर कुणी के पास ले जाती। बछिया लपककर अपनी माँ की गोद में जा पहुँचती, दूध जरा-सा ही पी पाती थी। कुणी अपनी बछिया के तन को चाटकर सुला दिया करती थी। बछिया भूखी रह जाती थी और राजा दूध पीकर मौज मनाता था। इसी तरह दिन बीतते रहे।

एक दिन हीरा दूध बेचने के लिए किले में गई। वहाँ दूध का मूल्य चुकाने में राजा के कोषाध्यक्ष ने देर लगा दी। शाम का घंटा बज गया। किले का फाटक बंद कर दिया गया। हीरा बोली, ''द्वार खोलो''।

पहरेदार ने कहा, ''आज्ञा नहीं है'' हीरा का मन बच्चे के लिए छटपटाने लगा। वह रोकर कहने लगी, ''मेरा मुन्ना भूखा है, तुम्हारे पैर पड़ती हूँ, फाटक खोल दो।''

राजा के पत्थर दिल पहरेदार ने द्वार नहीं खोला। बालक को दूध पिलाने के लिए माँ की छाती फटने

शिक्षण संकेत -

♦ वात्सल्य भाव प्रधान कोई कहानी या कविता से पाठ का प्रारंभ करें। ♦ पालित पशु-पक्षियों के प्रति प्रेम व स्नेह भावना का विकास करें। ♦ हाव-भाव के साथ कहानी बच्चों को सुनाएँ तथा उनसे सुनें।

लगी। उसने फाटक की जंजीर पकड़कर हिलाई और फिर विनती की, ''अरे भाई, एक बार द्वार खोल दो।'' पहरेदार ने फिर झल्ला कर कहा ''हुक्म नहीं है''।

सूरज छिप गया। पक्षी पंख फैलाकर अपने बसेरों की ओर उड़ चले। किले के मध्य भाग में देव मंदिर के ऊपर साँझ का तारा दिखने लगा। हीरा रोकर मन ही मन कहने लगी– ''काश, मुझे पंख मिल जाते और मैं अपने लाल के पास पहुँच जाती। वह दूध पिये बिना बिलख रहा होगा।''

पहाड़ के नीचे तराई में ही हीरा का घर है। कुणी गाय अपनी बछिया को पुकार रही है। वहाँ से उसकी पुकार हीरा को सुनाई पड़ी। वह दूध की मटकी पटककर उठ खड़ी हुई। वह किसी रास्ते की खोज करने लगी।

किले की दीवार पुरानी थी। एक जगह पर किनारे से पहाड़ धँस गया था। एक पीपल का पेड़ दीवार पर झुका था। उसी जगह पर आधी रात में चाँदनी पड़ रही थी। हीरा ने चाँदनी में देखा कि चट्टानों की नोंकें घड़ियाल के बड़े–बड़े दाँतों की तरह चमक रही है। हीरा उसी रास्ते से धीमे–धीमे उतरने लगी–एक–एक पत्थर पर पैर टिकाकर। उसके बाद एक पगडंडी से हीरा अपने घर जा पहुँची।

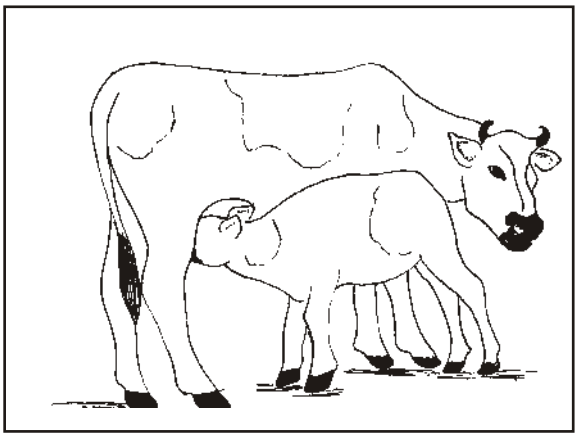

उस समय रात का तीसरा पहर बीत रहा था। भोर होने की तैयारी थी। बच्चा रो–रोकर सो गया था। हीरा सोते हुए बच्चे को उठाकर, छाती से लगाकर दूध पिलाने लगी। उधर रस्सी तोड़कर कुणी की भूखी बछिया भी दूध पीने लगी थी। हीरा ने उस दिन उसे बाँधा नहीं।

भोर हो गयी। दिन चढ़ने लगा। रायगढ़ के राजा ने नींद से जागकर दूध माँगा। हीरा दूध नहीं लायी थी।

सिपाही को दौड़ाया गया हीरा के घर से दूध लाने के लिए। हीरा कहने लगी–''दूध नहीं है, सूख गया है।''

वह ठहरा राजा का सिपाही। वह क्योंकर मानने लगा था। हीरा को पकड़कर वह किले में ले आया। राजा ने हीरा से सारी कहानी सुनी। उसका दिल पिघला। राजा ने हीरा को एक गाँव जागीर में दे दिया, और जिस मार्ग से हीरा अपने जीवन को संकट में डालकर, अपने बच्चे के समीप जा पहुँची थी, राजा ने उस कठिन रास्ते का नाम रखा –''हीरा–कुणी।''

नए शब्द –

ग्वालिन = दूध बेचने वाली । **पर्वत** = पहाड़ । **बिलखना** = बहुत अधिक रोना, दु:खी होना । **तरसना** = किसी वस्तु को पाने के लिए बेचैन रहना । **कोषाध्यक्ष** = खजांची, आय–व्यय का हिसाब रखने वाला। **पहरेदार** = रक्षक, रखवाली करने वाला । **कुणी** = गाय का नाम । **छटपटाना** = तड़पना, व्याकुल होना। **छाती फटना** = दु:ख का असहनीय हो जाना । **जागीर** = राज्य की ओर से मिली हुई भूमि। **संकट** = मुसीबत । **चट्टान** = भारी व बड़ा पत्थर ।

अनुभव विस्तार

1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

(क) सही जोड़ी बनाइए –

बछिया भूखी रह जाती थी	–	दूध के लिए तरसती रहती थी।
हीरा मन ही मन रो–रोकर कहने लगी	–	राजा दूध पीकर मौज मनाता था।
राजा के पत्थर दिल पहरेदार ने द्वार नहीं खोला	–	काश, मुझे पंख मिल जाते।
बछिया अपनी माँ को नहीं पा सकती थी	–	बालक को दूध पिलाने के लिए माँ की छाती फटने लगी।

(ख) सही विकल्प चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(अ) वह दूध दुहकर बेचने के लिए राजा के .....में चली जाती थी। (घर, किले)

(ब) राजा कुणी .....का दूध पीकर आनंद मनाता था। (गाय, बकरी)

(स) .....का फाटक बंद कर दिया गया। (किले, भवन)

(द) राजा ने हीरा से सारी.....सुनी। (कविता, कहानी)

2. अति लघु उत्तरीय प्रश्न –

(अ) ग्वालिन का नाम क्या था?

(ब) दूध–दुहने के समय कुणी गाय रह–रहकर किसे पुकारती थी?

(स) हीरा किले से वापिस कब लौट आती थी?

(द) राजा ने हीरा को जागीर में क्या दिया?

3. लघु उत्तरीय प्रश्न–

(अ) दूध दुहते समय हीरा बछिया के साथ कैसा व्यवहार करती थी?

(ब) किले का फाटक बंद होने पर हीरा पहरेदार से क्या बोली?

(स) राजा का मन क्यों पिघला ?

भाषा की बात–

1. बोलिए और लिखिए–

महाराष्ट्र, रायगढ़, कोषाध्यक्ष, पत्थर, चट्टानों

2. शुद्ध वर्तनी पर गोला लगाइए –

(अ) कुणी, कूणी, कुणि, कूणि

(ब) बछिया, बछीया, बाछिया, बछिय

(स) पेहरदार, पहेरदार, पेहारदार, पहरेदार

(द) ग्वलिन, ग्वालीन, गवालिन, ग्वालिन

■ **पढ़िए और समझिए –**

''शिवाजी वीर योद्धा थे। उनकी वीरता से मुगल शासक घबराते थे। वे बालक ही थे किन्तु उनका बालपन भी युद्ध की कहानियों को सुनते बीता था। तानाजी मालसुरे और सोनदेव उनके मित्र थे उनकी मित्रता भी अनूठी थी।''

ऊपर दिए गए रेखांकित शब्द 'शिवाजी' 'तानाजी' और 'सोनदेव' व्यक्तियों के नाम हैं। अत: ये व्यक्तिवाचक संज्ञा है। 'मित्रता' और 'वीरता' शब्द भावों को व्यक्त करते हैं। अत: ये भाववाचक संज्ञा हैं। इसी प्रकार 'वीर' 'बालक' और 'मित्र' शब्द जातिवाचक संज्ञा है।

इस प्रकार संज्ञा के तीन प्रकार होते हैं।

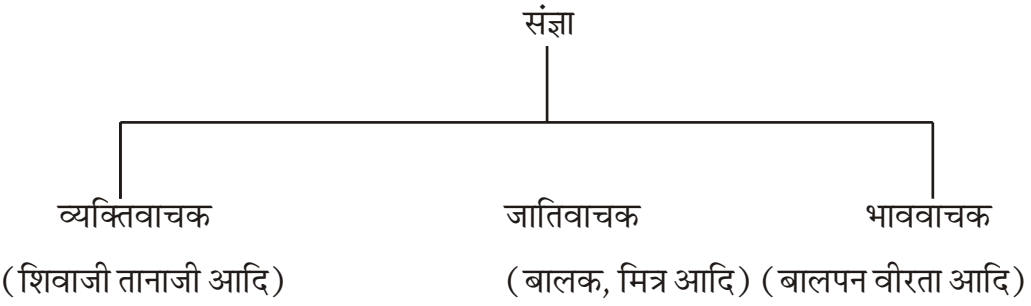

3. निम्नलिखित गंद्याश को ध्यान से पढ़कर व्यक्तिवाचक, जातिवाचक और भाववाचक संज्ञाएँ छाँटकर लिखिए –

''विवेकानन्द को कौन नहीं जानता? वे महान विचारक, दार्शनिक और धार्मिक व्यक्ति थे। उनके विचार समाज का मार्ग प्रशस्त करते हैं। उनके भाषणों में मधुरता, गंभीरता, मानवीयता और राष्ट्रीयता कूट–कूट कर भरी होती थी। भारत के महान सपूतों दयानन्द सरस्वती, राजाराम मोहन राय'' तथा 'महात्मा गांधी' जैसे महापुरूषों की सूची में उनकी गणना होती है।

4. विलोम शब्दों की सही जोड़ी बनाइए–

सूर्य	–	पराया
दिन	–	प्रजा
सुबह	–	शाम
राजा	–	रात
अपना	–	चन्द्र

5. रेखांकित संज्ञा शब्दों के स्थान पर नीचे दिए गए सर्वनामों में से उचित सर्वनाम शब्द चुनकर भरिए –

(वह, उसकी, उसके)

(अ) गाय का नाम था कुणी। <u>गाय की</u> एक महीने की बछिया थी।

(ब) <u>हीरा के</u> मन में बछिया के लिए दया नहीं जागती थी।

(स) राजा गाय का दूध पीकर आनन्द मनाता था। <u>राजा</u> दयालु नहीं था।

■ **निम्नलिखित पंक्तियों को ध्यान से पढ़िए और समझिए –**

''हीरा सोते हुए बच्चे को <u>उठाकर</u> छाती से <u>लगाकर</u> दूध पिलाने लगी। उधर रस्सी <u>तोड़कर</u> कुणी की भूखी बछिया भी <u>दौड़कर</u> गाय के पास <u>पहुँचकर</u> दूध पीने लगी।''

उपर्युक्त रेखांकित शब्दों में मूल क्रिया 'उठना', 'लगना', 'तोड़ना', दौड़ना और पहुँचना क्रिया के रूप बनाए गए है।

इस प्रकार के क्रिया के रूप पूर्वकालिक क्रिया होते है। पूर्वकालिक क्रिया मुख्य क्रिया से पहले समाप्त हो जाने वाली क्रिया होती है।

6. **निम्नलिखित क्रियाओं के पूर्वकालिक क्रिया रूप बनाइए।**

पढ़ना, लिखना, हँसना, देखना, जागना, पीना, लाना।

अब करने की बारी

- अपने क्षेत्र के बुजुर्गों/ग्राम सेवकों/पशु चिकित्सकों से मिलकर पशुओं के स्वभाव के विषय में विस्तृत जानकारी प्राप्त कीजिए एवं अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखिए।
- कहानी पढ़कर अपनी कल्पना से गाय का चित्र बनाइए।
- पालतू पशु-पक्षियों से सम्बंधित लोक कथाओं को अपनी दादी, नानी या किसी व्यक्ति से सुनकर बाल सभा में अन्य छात्र-छात्राओं को सुनाएँ।